मिडिल स्कूल शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र

निदेश सोनी

शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र (SPK), बच्चों को नवाचारी तरीक़े से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मुहैया करने के लिए एकलव्य संस्था द्वारा स्थानीय समुदाय की भागीदारी से किया जाने वाला एक प्रयास है। यह वह जगह है जहाँ बच्चों के पालक बिना झिझक आ सकते हैं, और केन्द्र प्रबन्धन व संचालन में भागीदारी कर सकते हैं। वे केन्द्र संचालक और शिक्षकों से मिल सकते हैं अपने बच्चों की पढ़ाई के बारे में उनसे बेबाक होकर सवाल पूछ सकते हैं। यहाँ न तो पाठ्यक्रम पूरा करने की दौड़ है, और न ही स्पर्धा का माहौल है। यहाँ हर बच्चा मुख्यधारा की शिक्षा की उन दक्षताओं को अपने तरीक़े से हासिल करने का प्रयास करता है, जो स्कूल की व्यस्त दिनचर्या में छूट जाती हैं।

मध्यप्रदेश के कुछ ज़िलों में एकलव्य संस्था द्वारा संचालित "प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम" (प्राशिका) ने शिक्षा जगत में अपनी एक अमिट छाप छोड़ी है। इस कार्यक्रम के अनुभवों से एक बात जो उभर कर आई वह यह थी कि शिक्षा में बदलाव का प्रयास समुदाय की भागीदारी के बिना अधूरा है। और यहाँ से *शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र* की अवधारणा का उदय हुआ। पिछले दो दशकों से एकलव्य के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में, प्राथमिक शालाओं के बच्चों के लिए SPK कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

प्राथमिक शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र

प्राथमिक शाला के आस-पास, गाँव या मोहल्ले में ही स्कूल के समय के पहले या बाद में दो घण्टे के लिए SPK लगाया जाता है। एक केन्द्र में 35 बच्चों को दर्ज किया जाता है। कोशिश यह होती है कि हम सबसे पहले उन बच्चों को लें जिन्हें शैक्षिक सहायता की सबसे ज़्यादा आवश्यकता है और उनमें भी लड़कियों, वंचित जाति या परिवारों के बच्चों को प्राथमिकता दी जाती है। केन्द्र के संचालन के लिए आमतौर पर गाँव के ही किसी व्यक्ति को, समुदाय की सहमति से चुना जाता है और उसे अकादमिक प्रशिक्षण दिया जाता है। केन्द्र संचालक का मानदेय व बच्चों द्वारा उपयोग की जाने वाली सामग्री एकलव्य संस्था मुहैया कराती है। कई जगहों पर केन्द्र की सामग्री और केन्द्र संचालकों के मानदेय का कुछ हिस्सा पालकों द्वारा भी वहन किया जाता है। केन्द्र में पढ़ने वाले बच्चों के पालकों व उस गाँव के लोगों को शामिल करके एक समिति बनाई जाती है जिसकी मासिक बैठक की जाती है। बैठक में केन्द्र के रख-रखाव, प्रबन्धन, बच्चों की पढ़ाई, केन्द्र संचालन में आने वाली दिक़्क़तों, बच्चों की उपस्थिति पर चर्चा व समीक्षा होती है। एक एसोसिएट भी होता है, जो नियमित रूप से केन्द्रों का अवलोकन करता है और केन्द्र संचालकों को अकादमिक सहयोग प्रदान करता है और केन्द्र संचालन के हर पहलू में मदद करता है।

केन्द्र संचालक व एसोसिएट्स के नियमित अकादमिक सपोर्ट के लिए एकलव्य की ओर से पाक्षिक व मासिक बैठकों का आयोजन किया जाता है, जिसमें केन्द्र की अकादमिक योजना, तैयारी व केन्द्र की व्यवस्था/समस्याओं पर बात की जाती है। क्षमतावर्धन के लिए केन्द्र संचालक, एसोसिएट्स व पालक समिति के सदस्यों को दूसरे केन्द्रों/संस्थाओं का भ्रमण/अवलोकन भी कराया जाता है। जहाँ पर वे अलग-अलग प्रयासों को देख सकें और उन्हें अपने केन्द्र पर अपना सकें। इसके इतर केन्द्र संचालकों व एसोसिएट्स के लिए साल में दो बार एक सप्ताह के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की जाती है। केन्द्रों पर बच्चों की दक्षताओं के आकलन के लिए एक सतत आकलन शीट भी होती है, जिसमें समय-समय पर बच्चों के द्वारा प्राप्त कर ली गई दक्षताओं को दर्ज किया जाता है। एक स्तर की तैयारी के बाद बच्चे शाला की मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल हो जाते हैं और उनकी जगह पर दूसरे ज़रूरतमन्द बच्चे केन्द्र में शामिल हो जाते हैं।

समय बीतने के साथ SPK का यह स्वरूप महत्त्वपूर्ण होता चला गया है, और एकलव्य में यह कार्यक्रम कई रूपों में जारी है। इस प्रयास को काफ़ी सराहा जाता है, और कुछ संस्थाएँ इस मॉडल का अपने क्षेत्रों में प्रयोग भी कर रही हैं। कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण व सहायक शिक्षण सामग्री आदि का सहयोग देकर एकलव्य इन संस्थाओं में SPK के मॉडल को विकसित व स्थापित करने में सहयोग करता है। शिक्षा के इस प्रयास की सफलता की एक बड़ी वजह इस कार्यक्रम में समुदाय की भागीदारी रही है।

मिडिल स्कूल शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र

वर्ष 2016 में एकलव्य ने मध्यप्रदेश के बैतूल ज़िले के शाहपुर विकासखण्ड के 12 गाँवों में जमशेद जी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से यह प्रयोग शुरू किया था। इसके नाम के

अनुसार इसमें कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों के साथ सीखने-सिखाने के प्रयास किए गए हैं। माध्यमिक स्कूलों के बच्चों के साथ किया गया यह प्रयास, प्राथमिक शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र से कई मायनों में अलग है क्योंकि अलग उम्र, अलग कक्षा के चलते उनकी ज़रूरतें अलग हैं। यहाँ पर हम उन बिन्दुओं का ज़िक्र करेंगे, जिससे यह प्रयोग कुछ अलग बन पड़ता है, साथ ही इन बदलावों के क्या आधार रहे हैं, उस पर भी अपनी बात रखेंगे।

केन्द्र संचालक

केन्द्र संचालक वह साथी होता है, जिसका बच्चों के साथ सबसे ज़्यादा जुड़ाव रहता है, वह बच्चों के साथ एक सहजकर्ता की भूमिका में होता है। प्राथमिक SPK में केन्द्र संचालक का चुनाव स्थानीय गाँव से ही करने पर ज़ोर दिया जाता है, पर कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों को गणित, भाषा, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान विषय पढ़ने होते हैं इसलिए यह ज़रूरी था कि संचालक साथी इस तरह का हो जो इन विषयों की एक स्तर की समझ रखता हो और साथ ही स्वयं सीखने के लिए तैयार हो। चूँकि ज़्यादातर MS-SPK दूर-दराज के गाँव में खोले जा रहे थे, इसलिए गाँवों में इस काम के लिए उपयुक्त संचालक मिलना मुश्किल हो रहा था। SPK के मॉडल के अनुसार केन्द्र संचालक का चुनाव समुदाय के द्वारा किया जाता है। हमने यह तय किया कि हम आस-पास के गाँवों में भी देखेंगे और दो या तीन लोग चुनकर उनके नाम पालकों की बैठक में रखेंगे, जिनमें से किसी एक साथी को समुदाय के द्वारा केन्द्र संचालन के लिए चुना जा सकता है हमने स्थानीय केन्द्र संचालक के चुनाव में आने वाली समस्या को समुदाय के साथ साझा किया तो वे भी हमारी बात से सहमत हुए और माध्यमिक केन्द्र संचालक का चुनाव इसी प्रकार से किया जाने लगा।

समूह-निर्माण

प्राथमिक SPK में बच्चों को केन्द्र में लाने के पहले सभी बच्चों का गणित व भाषा विषय का बेसलाईन टेस्ट लिया जाता है। इसके परिणामों का विश्लेषण करने के बाद एक कक्षा में कुल 35 बच्चों को दर्ज किया जाता है। बच्चों की दक्षताओं के आधार पर उन्हें तीन समूहों में बाँटा जाता है। 'ए' समूह के बच्चे ज़्यादा दक्ष होते हैं, उनसे कम दक्षताओं के स्तर पर 'बी' समूह और 'सी' समूह के बच्चे निचले स्तर पर होते हैं। समय-समय पर बच्चों का मूल्यांकन किया जाता है और उनके द्वारा प्राप्त दक्षताओं को सतत मूल्यांकन शीट में दर्ज किया जाता है और उसके आधार पर बच्चे 'सी' समूह से 'बी' और फिर 'ए' समूह में जाते है।

समूह-आवंटन के दौरान केवल बच्चों की दक्षताओं को देखा जाता है, न कि उनकी कक्षा या उम्र को। MS-SPK टीम में काम करने वाले साथियों को ऐसा करना उपयुक्त नहीं लग रहा था, टीम को यह लगता था कि हम समूहों के नाम भले ही कुछ भी रख दें, पर थोड़े समय बाद बच्चों को यह पता लग ही जाएगा कि वे दक्षता के आधार समूह में हैं। इस तरह बाँटने से, कम दक्षता वाले बच्चों के आत्मविश्वास पर असर पड़ता है। उनमें हीन भावना आती है और आत्मविश्वास कम होता है ख़ासकर तब जब कोई बच्चा तीसरी, चौथी या पाँचवी कक्षा में हो और दक्षताओं के आधार पर उसे 'सी' समूह में रखा जाए। इसलिए इन दक्षताओं का निर्धारण केन्द्र संचालक द्वारा कक्षा-शिक्षण के दौरान किया जाता है जिसे ज़रूरत के अनुसार बदला भी जा सकता है।

हमारा एक दीर्घ-कालीन लक्ष्य यह रहा है कि हम केन्द्र संचालक के क्षमतावर्धन के लिए लगातार प्रयास करेंगे जिससे उनकी स्वायत्तता बनी रहे, और वे अपनी कक्षा में बच्चों के लिए बेहतर निर्णय ले सकें।

विषयों के बारे में हमारी सोच

गणित

एनसीएफ़ 2005 कहता है कि, ''सभी बच्चे गणित सीख सकते हैं, और सभी बच्चों को गणित सीखने की ज़रूरत है।'' हमने इसी बात को आधार वाक्य माना है। गणित बच्चों के लिए महज एक विषय न हो, बच्चे तर्क लगाने और अपने दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने में भी गणित के तरीक़ों का प्रयोग करें। इन कौशलों को प्राप्त करने के लिए यह ज़रूरी है कि बच्चों में संख्या-बोध (जिसमें संख्या व संक्रियाओं की समझ निहित है) हो। इसलिए हम इसके लिए कार्य करते हैं। इसके अलावा हमने कुछ और अवधारणाओं को भी चुना जिनमें भिन्न, प्रतिशत, दशमलव, ऋणात्मक संख्याएँ, क्षेत्रमिति, घातांक आदि भी थे।

इन अवधारणाओं पर काम शुरू करने से पहले हमने बच्चों का एक बेसलाईन टेस्ट भी लिया, और उन क्षेत्रों की पहचान की जहाँ पर हमें बच्चों के साथ काम करने की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। इन दक्षताओं के बिना गणित की अन्य क्षमताओं पर काम करना सम्भव नहीं था। मेरी नज़र में गणित विषय की अवधारणाएँ प्रकृति में श्रेणीबद्ध होती हैं, हमें इसमें बढ़ने के लिए एक क्रम में चलना होता है।

भाषा

भाषा सभी विषयों क़ा आधार है। इसके केन्द्र में होता है पढ़ना, लिखना व अभिव्यक्त करना। पढ़ने से आशय है समझकर पढ़ना (reading with comprehension), लिखने के कौशल को हम शुरुआत में तरजीह नहीं देते हैं, ज़्यादा ध्यान पढ़ने व

अभिव्यक्त करने पर होता है। हालाँकि लेखन भी अभिव्यक्ति का एक माध्यम है, पर पहले हम मौखिक अभिव्यक्ति पर ज़्यादा ध्यान देते हैं। इसके लिए बाल-पुस्तकालय और इसकी किताबें हमारी सबसे बड़ी ताक़त हैं, इन किताबों को पढ़ना और इनके साथ तरह-तरह की गतिविधियाँ जैसे स्वतंत्र पठन, टोलियों में पठन, कहानी सुनाना, कहानी पर नाटक बनाना, अपनी दिनचर्या को लिखना, अपने आस-पास की ख़बरों को इकट्ठा करके बाल-अख़बार बनाना, एक-दूसरे को पत्र लिखना, कविता-गायन आदि के माध्यम से हम भाषा-शिक्षण पर काम करते हैं। अक्षर या शब्दों के साथ भाषा-शिक्षण कराने के पारम्परिक तरीक़े की जगह सन्दर्भ आधारित भाषा-शिक्षण पर हमारा गहरा विश्वास है।

विज्ञान

बच्चों को केवल निष्कर्ष बताकर उसे याद करने के लिए कहने के बजाय उन्हें बातों को समझने और जो समझा है उसे दूसरों के साथ साझा करने, अपनी राय रखने, प्रयोग करने, जाँच करने और स्वयं उसका निष्कर्ष निकालने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। एकलव्य का विज्ञान-शिक्षा में एक अभिनव प्रयोग होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम रहा है, इस दौरान एकलव्य ने कक्षा 6 से 8 के लिए *बाल वैज्ञानिक* नामक तीन पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया था। MS-SPK कार्यक्रम में हम इन पुस्तकों को आधार मानकर बच्चों के साथ काम करते हैं।

सामाजिक विज्ञान

हम बच्चों के स्थानीय सन्दर्भों और उनके परिवेश से जुड़े कुछ छोटे-छोटे प्रोजेक्ट का चुनाव करते हैं, जैसे तेंदुपत्ता का संकलन और भण्डारण, ईंट बनाने की प्रक्रिया, गाँव में जलस्रोतों का सर्वे आदिI इन प्रोजेक्ट के माध्यम से हम बच्चों को समझने, विश्लेषण करने और तुलना करने जैसी क्षमताओं को हासिल करने के मौक़े उपलब्ध कराते हैं। परिवेश में होने वाली घटनाओं और उसका सम्बन्ध उनसे किस तरह से है, और उसका उन पर क्या प्रभाव पड़ता है यह जानने और विश्लेषण करने में यह प्रोजेक्ट बच्चों की मदद करते हैं। इसके अलावा वे इस बारे में सोचना, समझना, चर्चा करना और बेहतर तरीक़े से अपनी बात रखना भी सीखते हैं। कक्षा के बाहर किए जाने वाले इन प्रयोगों ने बच्चों की समझ को बढ़ाने में बड़ा योगदान दिया है।

सामाजिक मुद्दों पर चर्चाएँ

मासिक बैठक के रूप में हमने एक नई परिपाटी बनाई जिसमें MS-SPK टीम में काम करने वाले सभी साथी हर माह के अन्तिम रविवार को साथ बैठते हैं और किसी ख़ास विषय पर कोई पर्चा पढ़ते हैं या फ़िल्म देखते हैं और फिर इस पर चर्चा करते हैं। इन चर्चाओं में जेंडर, जाति, शोषण, भेदभाव, समानता, आरक्षण और हमारे आस-पास जो घट रहा है, उस पर बात करते हैं। इन चर्चाओं ने हमारे कार्यकर्ताओं के बीच में एक सकारात्मक सोच विकसित करने में मदद की है। कुछ समय के प्रयासों के बाद टीम के सदस्य पालकों के साथ बैठकों में इन मुददों को लेकर बात कर पाते हैं और बदलावों को लागू कर पाते हैं। इसकी एक बानगी है कि अब कोई भी पालक-बैठक, किसी भी धार्मिक स्थल पर नहीं की जाती है, क्योंकि इससे मासिक धर्म के दौरान महिलाओं को बैठक में शामिल होने का मौक़ा नहीं मिलता है। वहीं मासिक धर्म, महिलाओं के लिए कोई अभिशाप नहीं बल्कि एक शारीरिक प्रक्रिया है, इस तथ्य को स्थापित करने में हम कुछ हद तक सफल हुए हैं। और कम-से-कम टीम के बीच में तो इससे जुड़ी भ्रान्तियों को दूर कर पाए हैं, पालकों के बीच प्रयास जारी है। इसी तरह से किसी के भोजन, जाति, रंग, शारीरिक कमी या धर्म के आधार पर उसके साथ भेदभाव नहीं किया जा सकता है, इस तथ्य को हम कई तरीक़ों से बातचीत में शामिल कर पाए हैं। कुछ छोटी डाक्यूमेंट्री फ़िल्में इसमें बहुत मददगार रही हैं जैसे यूट्यूब पर उपलब्ध "लड्डु" एक सुन्दर प्रयास है। इनमें से कई चुनिन्दा चर्चाओं को हम बच्चों के बीच भी ले गए, जैसे Good Touch- Bad Touch, एक-दूसरे के भोजन, रहन-सहन के तरीक़ों और जाति के आधार पर होने वाले भेदभाव।

इन प्रयासों के लिए बहुत तैयारी और समय की दरकार होती है, हमने अपनी ओर से बेहतर करने का प्रयास किया है। इन मुद्दों पर गाँव के लोगों को शिक्षित करने से सरोकार रखने वाले स्थानीय युवाओं को हम लगातार इन बैठकों में आमंत्रित करते हैं, और उन्हें इन प्रयासों से जोड़ने की कोशिश की है। दो-तीन वर्षों के भीतर हम लगभग पचास युवाओं को तैयार कर पाएँ हैं जो गाँवों में जागरूकता लाने के प्रयास में अलग-अलग तरीक़ों से हमारी मदद कर रहे हैं।

MS-SPK किसी भी तरह से सरकारी स्कूलों का विकल्प नहीं है, यह स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर किया गया एक प्रयास है, जो स्कूल की मुख्यधारा की शिक्षा में बच्चों व पालकों को आने वाली समस्याओं को दूर करने में मदद करता है। ग्रामीण समुदाय के साथ किए जाने वाले संवाद व चर्चाओं से गाँव में शैक्षिक वातावरण निर्मित करने में मदद मिलती है और साथ ही इस तरह के प्रयासों को भी बल मिलता है।

निदेश सोनी एकलव्य संस्था में पिछले 12 वर्षों से कार्यरत हैं। वे गणित-शिक्षण में रूचि रखते हैं। वर्तमान में वे एकलव्य के शाहपुर केन्द्र पर कार्यरत हैं। उनसे *nideshsoni@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।